REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

स्वामी विवेकानन्द एवं भगवद्गीता के कर्मयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आरती कुमारी[1] , डॉली तिवारी[2]
[1]एसोशिएट प्रोफेसर , दर्शनशास्त्र विभाग , ति० मा० भागलपुर वि० वि० भागलपुर.
[2]शोध छात्रा , दर्शनशास्त्र विभाग , ति० मा० भागलपुर वि० , वि० वि० भागलपुर.

प्रस्तावना :—

कर्म की उत्पति कृ धातु से हुई है। कृ का अर्थ करना, (जो कर्म किया जाय)। कर्म का मतलब कोई भी कार्य करने से है। शारीरिक, मानसिक और वाचिक कार्य ही कर्म कहलाता है। हमारे कर्म जब स्वार्थ रहित होकर किए जाते है, तब कर्मयोग कहा जाता है।

वर्तमान समय में भी माँ, परिचारिका किसान, शिक्षक, कुड़ा, ढोने वाले इत्यादि अपने कर्म को कर्मयोगी की तरह फल की आशा किए बिना करते रहते है। साधारणतः कर्म की प्रकृति दो तरह की होती है प्रवृतिकारी एवं निवृतिकारी। जब कर्म को मन से करते हैं तभी हम विश्व में अपनी भागीदारी निभा सकते हैं और वही प्रवृति बन जाती है। जब किसी कर्म से निवृति हो जाती है तब हम उससे दूर भागते है। स्वामी विवेकानंद द्वारा बताये गए चार योगों में कर्मयोग का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्मयोग में दो तरह के कर्म आते हैं एक आसक्त कर्म दूसरा अनासक्त कर्म। कर्मयोग का मूलमंत्र है– ''अनवरत कर्म करते रहो परन्तु कर्म के प्रति सारी आसक्ति का परित्याग कर दो। कर्मयोग निष्काम भाव से मुक्ति प्राप्त करने कि विधि है। विवेकानंद के अनुसार यह सांसारिक चक्र भयानक यन्त्र की तरह है क्योंकि हम जैसे ही इस में हाथ डालते है, इस के वश में हो जाते है। सांसारिक चक्र से बचने के लिए हमें संसार के प्रति आसक्ति का परित्याग करना होता है। संसार में कूद पड़ना तथा कर्म के मर्म को जान लेना ही कर्मयोग है। गृहस्थ एवं कर्मठ व्यक्ति के लिए यह योग अति आवश्यक है।

अधिकांश व्यक्ति अपने जीवन के समय को व्यर्थ में खो देते है। देश और समाज की रक्षा के लिए कर्म करना चाहिए। कर्म के लिए कर्म करों जो आसक्ति रहीत हो। कर्म योगी कर्म का त्याग न कर कर्म फल का त्याग कर देते है।

सच्चा कर्मयोगी एक दाता की तरह होता है, वह कभी पुरस्कार की इच्छा नहीं रखते है। वे जानते है कि बन्धन का कारण दुःख है, जो आसक्ति का ही परिणाम है। भारतीय दर्शन कर्म को बंधन का कारण मानती है, लेकिन गीता में कर्म बंधन का कारण नहीं होता है। कर्मों का कुशलता से सम्पादन करना। (योग : कर्मसु कौशलम)

गीता के अनुसार जो कर्म ईश्वर के लिए किए जाते है वे बंधन उत्पन्न नहीं करते है। कर्म को ईश्वर का आदेश समझकर करने से मनुष्य को अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति होती है।

मनुष्य प्रकृति के सत्व, रजस एवं तमस के अधीन कर्म करते रहते हैं। इसलिए आत्म ज्ञानी को प्रकृति के बंधन से मुक्त होकर सदा कर्म करते रहना चाहिए। जिस तरह अज्ञानी फल की इच्छा से कर्म करते हैं उसी प्रकार आत्म ज्ञानी को लोकसंग्रह के लिए आसाक्ति रहित होकर कर्म करना चाहिए। गीता के अनुसार आत्मज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति ही कर्मयोगी है।

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' मनुष्य जब परोपकार की भावना से कर्म करते है तब वह सत्कर्म कहलाता है। निःस्वार्थ भावना से किया गया कर्म ही निष्काम कर्म कहे जाते हैं। गीता हमें सिर्फ मोक्ष के लिए तैयार नहीं करती है, बल्कि यह कर्म प्रधान भी है। गीता का विचार है– कर्म से

संन्यास लेने नहीं कहती, बल्कि जीवन पर्यन्त कर्म करते रहने की राह दिखाती है। जैसा स्वयं विवेकानंद जी कहते है- ''सबकुछ ईश्वर को अर्पण कर दो'' हम सब तो प्रभु की इच्छा का पालन कर रहे है। अतः किसी पुरूस्कार एवं दंड से हमारा कोई संबंध नही है।

'' मैं और मेरा यही समस्त क्लेशों का जड़ है,'' इसलिए इनके त्याग को ही आसक्ति का त्याग कहते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने कर्मयोग की दीपक से उपमा दी है। जिस प्रकार दीपक का जलना एवं प्रकाश का होना, उसमें तेल, बाती तथा मिट्टी के विशिष्ट सामूहिक भूमिका से संभव है। उसी प्रकार समस्त गुणों की सामूहिक भूमिका से कर्म उत्पन्न होते हैं। कर्म के रहस्य का ज्ञान ही आत्मज्ञान कहा गया है।

हम अपने संस्कार से उत्तम एवं अनुत्तम कर्म में भेद कर लेते हैं। यही विवके ज्ञान होता है। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद एवं गीता के अनुसार आत्मज्ञान (Self realization) का संयोग ही कर्मयोग कहलाता है।

Bibliography

(१) कर्मयोग **wikipidia**
(२) स्वामी विवेकानंद कर्मयोग- **प्रभात प्रकाशन**
ISBN- 978-93-5048-605-4
(३) **Swami Vivekananda interpretation of the four yogas- Indian express.com**
(४) कर्मयोग का तुलनात्मक अध्ययन- **wikipidia**
(५) श्रीमद्भगवद्गीता- **गीता प्रेस गोरखपुर- 273005**

LBP PUBLICATION